अंजीर की वैज्ञानिक खेती

कृषि कुंभ (अक्टूबर, 2023),
खण्ड 03 भाग 05, पृष्ठ संख्या 78–81

मोहनी परमार[1] एवं अमित कुमार[2],
[1]ए. के. एस. विश्वविद्यालय, सतना (म. प्र.)
[2]बी. एम. कृषि महाविद्यालय, खंडवा,
राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्व विद्यालय, ग्वालियर (म. प्र.), भारत।
Email Id: parmarmohini095@gmail.com

फसल का परिचय

अंजीर (*फाइकस कैरिका*) मोरेसी परिवार से संबंधित है वर्तमान में अंजीर की खेती भूमध्यसागरीय क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर की जाती है। जिसमें अमेरिका, अफगानिस्तान, ऑस्ट्रेलिया, भारत, चीन एवं अन्य देश सम्मिलित हैं। भारत में इसकी खेती मुख्यतः महाराष्ट्र के पश्चिमी भागों में (पुणे, लातूर, जालान एवं उस्मानाबाद), गुजरात, उत्तर प्रदेश (लखनऊ और सहारनपुर) और तमिलनाडु (कोयंबटूर) आदि राज्यों में की जाती है। अंजीर एक अत्यधिक पौष्टिक एवं स्वास्थ्य वर्धक फल है, जिसमें प्रोटीन, कैल्शियम, आयरन, रेशा और कैलोरी भरपूर मात्रा में पाई जाती है ।

जलवायु

अंजीर अर्द्ध – रेगिस्तानी क्षेत्र का मूल निवासी होने के कारण शुष्क और अर्द्ध शुष्क वातावरण, उच्च गर्म तापमान, भरपूर धूप एवं मध्यम सर्दी में आसानी से उगाया जा सकता है। फलों की गुणवत्ता के लक्षणों जैसे त्वचा, आकार एवं गूदे के रंग पर जलवायु का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। हालांकि अंजीर के पौधे 45 डिग्री सेल्सियस तक के तापमान को सहन कर सकते हैं, परंतु फलों की गुणवत्ता 39 डिग्री सेल्सियस तापमान से अधिक होने पर खराब हो जाती है एवं जिसके परिणाम स्वरूप अंजीर के फल जल्दी पक जाते हैं । अंजीर के परिपक्व पेड़ 4 डिग्री सेल्सियस निम्न तापमान का सामना कर सकते हैं, तथा पौधों की सुषुप्ता अवस्था के समय –10 डिग्री सेल्सियस तक तापमान सहन कर सकते हैं ।

मृदा

अंजीर की खेती सामान्यतः सभी प्रकार की मृदाओं में की जा सकती है, लेकिन गहरी एवं गैर –क्षारीय दोमट मृदा सबसे उत्तम मानी जाती है । हालांकि इसे उथली मृदा में भी उगाया जा सकता है । अंजीर के पौधे मृदा में क्लोराइड और सल्फेट लवण के प्रति सहनशील लेकिन सोडियम कार्बोनेट और बोरॉन लवण के प्रति संवेदनशील होते हैं अत्यधिक क्षार वाली मृदा में अंजीर के पौधे की पत्तियां शिराओं पर जलने के साथ–साथ गिरने लग जाती हैं । अंजीर के खेती के लिए मृदा का पी. एच. मान 7 से 8 उपयुक्त माना जाता है ।

उन्नत प्रजातियां

बागवानी की दृष्टिकोण से अंजीर की किस्मों को कैपरी अंजीर, स्मायरना अंजीर और सैंन पेड्रो अंजीर में वर्गीकृत किया गया

है। कैपरी अंजीर को तीन बार परागण की आवश्यकता होती है, जिसे कैप्रीफिकेशन कहा जाता है तथा स्मायरना प्रकार के अंजीर को कम से कम एक मौसम में परागण की आवश्यकता होती है। एड्रियाटिक या सैंन पेड्रो किसी भी मौसम में कैप्रीफिकेशन की आवश्यकता नहीं होती है । भारत में कैपरी अंजीर और स्मायरना अंजीर का कोई बाजार मूल्य नहीं है। भारत में व्यवसायिक रूप से उगाई जाने वाली कुछ महत्वपूर्ण किस्म में निम्न प्रकार हैं:

कॉनड्रिआः इसका पौधा छोटा होता है, जिसमें सघन कैनोपी पाई जाती है। फल पार्थेनोकार्पिक रूप से उत्पन्न होते हैं। इसके फल छोटे (35 ग्राम) एवं हरे रंग के होते हैं। इसके फलों में 20 डिग्री ब्रिक्स टी.एस.एस. होता है, इस किस्म की औसतन उपज 10 से 12 किलोग्राम प्रति पेड़ प्राप्त होती है। बाजार में इसके केवल ताजे फलों का उपयोग किया जाता है।

डियानाः इस किस्म के पौधे बड़े होते हैं। जो पार्थेनोकार्पिक प्रकार के फल उत्पादित करते हैं, इसके फलों का आकार पायरीफॉर्म एवं फलों का भार (80 से 120 ग्राम) तक होता है । इसके फलों में 18 डिग्री ब्रिक्स टी.एस.एस. होता है, इस किस्म से औसतन 35 से 40 किलोग्राम प्रति पेड़ उपज प्राप्त होती है इस किस्म के फलों को सुखाने के लिए उपयुक्त माना जाता है ।

एक्सलः पौधे मध्यम आकार के पार्थेनोकार्पिक फल एवं फलों का भार 45 से 55 ग्राम तक होता है । फलों के छिलके का रंग हल्के गुलाबी रंग के गूदे के साथ नींबू जैसे पीले रंग का होता है । फलों में औसतन 18 से 20 डिग्री ब्रिक्स टी.एस.एस. की मात्रा होती है, फलों की उपज 15 से 20 किलोग्राम प्रति पेड़ प्राप्त होती है । इसके फलों को पेड़ पर ही सूखने के लिए उपयुक्त माना जाता है ।

पूना अंजीरः यह भारत में उगाई जाने वाली सबसे लोकप्रिय किस्म है, फलों का भार 30 से 60 ग्राम तथा टी.एस.एस. की मात्रा 18 से 20 डिग्री ब्रिक्स होती है । तथा फलों की औसतन 20 से 25 किलोग्राम फल प्रति पेड़ उपज प्राप्त होती है ।

अनुशंसित दूरी एवं उचित पौध संख्या

अंजीर के पौधों की दूरी मृदा के प्रकार एवं किस्म पर निर्भर करती है । पूना अंजीर के लिए पौधे की अनुशंसित दूरी 5 X 5 मीटर 2 जिसमें 400 पौधे प्रति हेक्टेयर लगाए जा सकते हैं । एवं एक्सल और कॉनड्रिआ जैसी छोटी या कम बढ़ने वाली किस्मों को 2.5 X 2.5 मीटर 2 की दूरी पर लगाया जाता है जिसमें 1600 पौधे प्रति हेक्टेयर लगाए जा सकते हैं ।

अनुशंसित समय पर पौधरोपण

अंजीर के पौधे लगाने का सर्वोत्तम समय बारिश के मौसम के शुरुआती दिनों में होता है । पौधरोपण करने से पूर्व खेत की अच्छी तरह से जुताई करके 60 X 60 X 60 सेंटीमीटर आकार के गड्ढे तैयार करने के बाद लगभग 15 दिनों तक उन्हें खुली धूप में खाली छोड़ दिया जाता है। इसके पश्चात तैयार गड्ढों में अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद, ऊपरी मिट्टी एवं रेत (1:1:1) का मिश्रण तैयार करके गड्ढों में भर दिया जाता है। एवं मिश्रण के साथ 0.5 किलोग्राम नीम खली, 0.5 किलोग्राम करंज खली तथा 0. 5 किलोग्राम सुपर फास्फेट को प्रति गढ्ढे के हिसाब से मिलाना चाहिए , एवं रोपण के समय पौधे की पत्तियों को कम कर देना चाहिए ताकि वाष्पोउत्सर्जन के द्वारा पानी

की हानि कम से कम हो तथा पौधा शीघ्र अति शीघ्र वृद्धि कर सकें।

अनुशंसित खाद एवं उर्वरक

अंजीर में पोषक तत्वों की मात्रा मृदा व किस्मों के प्रकार पर निर्भर करती है, अंजीर के युवा पौधों के लिए उर्वरकों को हमेशा मानसून की शुरुआती अवस्था में दिया जाना चाहिए। अंजीर के लिए विभिन्न खादों और उर्वरकों की वर्षवार आवश्यकता निम्न तालिका में दी गई है।

तालिका 1 अंजीर के लिए अनुशंसित खाद एवं उर्वरक (किलोग्राम प्रति पेड प्रति वर्ष)

वर्ष	गोबर की खाद	नीम की खली	नाइट्रोजन	फॉस्फोरस	पोटेशियम
1	25	0.50	0.060	0.040	0.040
2	25	0.50	0.120	0.080	0.080
3	25	1.00	0.180	0.120	0.120
4	30	1.50	0.240	0.160	0.160
5 वे वर्ष के बाद	35	2.00	0.300	0.200	0.200

कटाई – छंटाई

अंजीर के पौधों को शुरु में एक ही तने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है । ताकि पार्श्व शाखाएं समान रूप से वितरित होने के साथ–साथ पौधे का एक यांत्रिक रूप से मजबूत ढांचा तैयार हो सके । अंजीर के पौधों को लगभग 1 मीटर तक बढ़ने के बाद शीर्ष से काट दिया जाता है । जिसके द्वारा मुख्य तने के चारों ओर पार्श्व शाखाओं की वृद्धि अच्छे हो सके। अंजीर के पौधों के लिए प्रशिक्षण हेतु खुला केंद्रीय प्रणाली अच्छी मानी जाती है। अंजीर में छंटाई प्रतिवर्ष वृद्धि एवं फल उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए की जाती है। अंजीर में छंटाई का समय और प्रकार प्रतिवर्ष क्षेत्र, किस्म एवं फसलों की संख्या के आधार पर निर्धारित किया जाता है, आमतौर पर हमारे देश में सालाना अंजीर की एक ही फसल को व्यवसायिक रूप से लिया जाता है। छंटाई के बाद पौधों पर 1% बोर्डेक्स मिश्रण का छिड़काव करना लाभकारी होता है। अंजीर के पौधों में नोचिंग की क्रिया से बचने के लिए 100 पी. पी.एम इथ्रेल के साथ पूर्व छंटाई करना उपयोगी है।

प्रमुख कीट एवं बीमारियों का नियंत्रण

अंजीर का रतुआ रोगः अंजीर के पौधों में यह रोग नम परिस्थितियों के कारण गंभीर समस्या उत्पन्न करता है । जो सरोटेलियम फिक्की द्वारा उत्पन्न होता है, इस रोग में पौधे की पत्तियों पर प्रारंभ में पीले धब्बे पड़ जाते हैं, जो बाद में पूर्णतः पीली होकर गिर जाती हैं । इस रोग के नियंत्रण के लिए 0.1% हेक्साकोनाजोल या कॉपर युक्त कवकनाशी दवा का छिड़काव करना चाहिए।

एंथ्रेकनोजः अंजीर के पौधों में यह रोग सामान्यतः भारत के सभी क्षेत्रों में पाया जाता है इस रोग के नियंत्रण के लिए ऑरियोफंजिन की 40 पी .पी .एम. मात्रा के साथ 20 पी .पी .एम. कॉपर सल्फेट को

साबुन के घोल के साथ मिलाकर रोगग्रस्त पौधों पर छिड़कना चाहिए ।

कीट

तना छेदक रंग भृंग: यह कीट अंजीर की शाखाओं एवं तने में छेद कर देता है, इस कीट से प्रभावित तने व शाखाएं सूखने लग जाती हैं, जिसके परिणाम स्वरूप पौधे की वृद्धि एवं फल उत्पादन की क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है । इस कीट को नियंत्रित करने के लिए प्रभावित शाखाओं को काट कर नष्ट कर दें और डी.डी.वी.पी. कीटनाशक दवा की 0.05% घोल का छिड़काव करें एवं तने के छिद्रों में भी कीटनाशक दवा डालना चाहिए ।

फल मक्खी: बैक्ट्रोसेरा डॉर्सेलिस नामक फल मक्खी अंजीर के फलों को नुकसान पहुंचाती है। फल मक्खी के संक्रमण से बचने के लिए हमेशा कम परिपक्व या अपरिपक्व फलों को चुने, साथ ही संक्रमित एवं गिरे हुए फलों को नष्ट कर दें। आई. आई.एच.आर. से बने 8 से 10 ट्रैप प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करना चाहिए।

दैहिक विकार

सनबर्न: सनबर्न अंजीर के युवा अवस्था के पौधों की गंभीर समस्या है। इस विकार से फल का प्रभावित हिस्सा फट जाता हैं, और छाल छिल जाती है। पेड़ों की अत्यधिक छंटाई करने से

यह समस्या आती है। इस रोग के नियंत्रण के लिए छंटाई के पश्चात सूर्य के प्रकाश के सीधे संपर्क में आने वाले भागों पर चूने से पुताई करना चाहिए।

फलों का फटना: फलों का फटना आमतौर पर तब होता है, जब फलों के पकने की अवस्था के समय में वर्षा होने लग जाए। इससे फलों का बाजार मूल्य कम हो जाता है तथा फल बाजार के लिए पूरी तरह से अनुपयुक्त हो जाते है तथा कभी–कभी फलों का फटना पोषक तत्वों की कमी से भी होता है।

फलों की तुड़ाई: अंजीर के फलों में तुड़ाई के समय गूदा मुलायम, गर्दन पर थोड़ा मुरझाए हुए तथा जब फलों के डंठल में लेटेक्स की मात्रा कम हो या ना के बराबर होती है। अंजीर के फलों की तुड़ाई फरवरी–मार्च से शुरू होकर मई – जून माह तक की जाती है। व्यवसायिक रूप से अंजीर की तुड़ाई उसकी फल गुणवत्ता गूदे की परिपक्वता और परिपक्वता सूचकांकों पर निर्भर करती है।

उपज एवं भंडारण

अंजीर के प्रति पेड़ से 180 से 360 फल प्राप्त होते हैं । अंजीर के पूरी तरह से पके हुए ताजे फलों को 90% सापेक्ष आर्द्रता तथा 0 डिग्री सेल्सियस तापमान पर लगभग एक सप्ताह तक सुरक्षित भंडार किया जा सकता है। अंजीर के फलों को नियंत्रण वातावरणीय भण्डार गृहों में जहां 5 से 10% ऑक्सीजन और 15 से 20% कार्बन डाइऑक्साइड का संयोजन होता है । ऐसी स्थिति में फलों को 3 से 4 सप्ताह तक किया जा सकता है।